

कन्यादान

कविता का सार / प्रतिपाद्य

कन्यादान एक माँ के दुख तथा चिंता को व्यक्त करती कविता है। इसमें माँ स्त्री के पारंपारिक रूप से बिलकुल अलग है। बेटी उसके लिए अंतिम पूंजी के समान है क्योंकि वह उसका सबकुछ है। माँ के अनुभव सीख के रूप में बेटी के सामने प्रकट होते हैं। लड़कियों को ससुराल में दहेज के कारण प्रताड़ित किया जाता है, इस सत्य उजागर होता है। आभूषण और सौंदर्य स्त्री की कमजोरी बताए गए हैं। अतः माँ बेटी को सावधान करती है और इनसे दूर रहने के लिए कहती है। इसके अतिरिक्त यह कविता एक प्रश्न खड़ा करती है कि विवाह के समय बेटी को वस्तु के समान क्यों दान दे दिया जाता है।

माँ की सीख

- सजग रहना।
- आत्महत्या मत करना।
- समझदारी से काम लेना।
- रूप के मोह में मत पड़ना।
- वस्त्र-आभूषण के मोह में मत पड़ना।
- लड़की जैसी कमजोरियों को वरण मत करना।

लड़की की छवि

- अनुभवहीन।
- सीधी-सादी।
- भोली-भाली।
- दुख से अंजान।
- मधुर कल्पना में खोई रहने वाली।

कविता का उद्देश्य

- स्त्रियों को अपने अस्तित्व के प्रति सचेत करना।
- स्त्रियों को अपनी कमजोरी से छुटकारा पाने के लिए प्रेरित करना।